Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

अल्मा कबूतरी उपन्यास में कबूतरा जनजाति का लोक-व्यवहार एवं संस्कृति

डॉ. नांग सुलिना चाउतांग

TGT (हिन्दी),पासीघाट ईस्ट सियांग, अरुणाचल प्रदेश

सारांश

खानाबदोश के रूप में जीवन व्यतीत करती जनजातियां देश के सभी अंचलों में निवास करती हैं। नट, कंजर, कबूतरा, हाबूड़े आदि जनजातियों के कुछ समूह गांवों के समीप सीमाओं में अपना बसेरा स्थापित करते रहे हैं। मुख्य समाज से अलग निवास की प्रकृति ने उनमें स्वच्छन्दतापूर्वक जीवन जीने की अभिलाषा निर्मित होती रही। भारतीय समाज व्यवस्था में जनजातियों का अलग विशेष स्थान रहा है। जनजातियों की सामाजिक व्यवस्था उनके अपने कबीले एवं जातियों में निर्मित सामाजिक–सांस्कृतिक मान्यताओं के आधार पर परिचालित होती है। प्रत्येक जनजाति का अपना एक सामाजिक संगठन है और उनकी संस्कृति में विविधता दिखाई देती है। प्रस्तुत आलेख में अल्मा कबूतरी उपन्यास में कबूतरा जनजाति के लोक–व्यवहार एवं संस्कृति का अध्ययन किया गया है।

प्रमुख शब्द– लोक–व्यवहार, संस्कृति, स्वच्छन्दतापूर्वक जीवन, जनजातीय अस्मिता।

परिचय

समकालीन कथा साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर मैत्रेयी पुष्पा का सन् 2000 में प्रकाशित 'अल्मा कबूतरी' चर्चित उपन्यास है। यह रचना पिछली सदी के उत्तरार्ध में उभरे साहित्यिक विमर्शों के बरक्स जनजातीय अस्मिता का नया आख्यान उपस्थित करती है। अट्ठारह अध्यायों में विभाजित इस उपन्यास के केन्द्र में बुंदेलखण्ड अंचल की यायावर कबूतरा जनजाति है। 'अंग्रेजों के शासनकाल में 1871 के 'अपराधी जनजाति अधिनियम' के तहत जिन घुमन्तू जनजातियों जैसे पारदी, कलंदर, सांसी, मोघिया, माम्पट, औदिया, नट, हाबुडे, बनजारे, कंजर आदि को उनके पैसे के कारण अपराधी ठहराया गया था, उन्हीं में से एक जरायम पेशा

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

करने वाली जनजाति के रूप में कबूतरा जाति को पहचाना जाता है।'[1] यह कबूतरा जनजाति अपनी उत्पत्ति का सम्बन्ध जौहर की किंवदंति बन चुकी चितौड़गढ़ की रानी पद्मिनी से जोड़ती है और अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रीय गदर के दौरान संघर्ष करने वाली रानी झलकारीबाई का गौरवगान करती है। ''कबूतरा जाति आज भी समाज के वृत्त पर डेरा डालकर जीती है। खूंटे उखड़ते और पुनः गाड़े जाते हैं किन्तु वृत्त के भीतर नहीं परिधि की रेखा से सटे या उससे बाहर।''[2] गांव के बाहरी छोर पर झुग्गी–झोपड़ियों में रहने वाली कबूतरा जनजाति को सभ्य समाज के लोगों द्वारा बहिष्कृत और अपमानित किये जाने का दर्द लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

उपन्यास की कथा में मडोरा खुर्द गांव के दो समाज है। पहला समाज कबूतरा जनजाति का है, जिसके चरित्र कदमबाई, भूरी, अल्मा, सरमन, जंगलिया, राणा, रामसिंह, दूलन आदि हैं। दूसरा सभ्य समाज है, जिसे कबूतराओं की भाषा में 'कज्जा' कहा जाता हैं। इस सभ्य समाज के चरित्र मंसाराम, केहरसिंह, जोधा, करन, आनंदी, सूरजभान, धीरज और श्रीराम शास्त्री आदि हैं। इन दो समाजों के अन्तर्विरोध और संघर्षमूलक स्थितियों को चिह्नित करते हुए कथावस्तु का विकास एवं विस्तार हुआ है। कबूतरा जनजाति की प्रतिनिधि स्त्री चरित्र कदमबाई का पति जंगलिया को कज्जा लोग पुलिस के हाथों से मरवा देते हैं। इसका फायदा उठाकर सभ्य समाज का चरित्र मंसाराम छल–छद्म से कदमबाई के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करता है। इनके सम्बन्धों से राणा का जन्म होता है। राणा को जन्म देना कदमबाई की ईर्ष्या, आकांक्षा और सपने का प्रतिफल है जो कज्जा लोगों से टकराने और जंगलिया के मौत का बदला लेने की प्रतिरोधी चेतना को दर्शाता है। उसका संकल्प है, ''राणा रे लाठी भांज, गुलेल चला। कुल्हाड़ी का वार करना सीख। मेरा बेटा बहादुरी से चोरी करेगा। सोने की मूर्ति किसी के जरिए नहीं, कज्जा लोगों पर मरघट की राख डालकर लूट लाएगा। राणा को मैंने ऐसे ही गर्भ में नहीं रखा, लोग उसके करतबों से थर्राने लगेंगे। ऐसे ही दहल जाएंगे, जैसे मैं थर्रा गई थी जंगलिया की मौत पर।''[3] वह राणा की पढ़ाई एवं सुरक्षा के लिए चिंतित होती है और अपनी जाति के हिम्मतवान चरित्र गोरमखिया गांव के रामसिंह के पास भेजती

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

है। कदमबाई अपनी भावी जिन्दगी को लेकर राणा के माध्यम से बड़े–बड़े सपने देखती है। उसके सपने धीरे–धीरे आकार लेने लगते हैं। ''कदमबाई रामसिंह के साये में बेटे की तस्वीर देख रही है। तस्वीर किसी नदी किनारे की एकांत या सुनसान जंगल में पेड़ों के नीचे रोने की नहीं, गांवों में जमी सत्ताओं से टकराने की है। वह छिपने का नहीं लड़ने का सपना देख रही है।''[4] परन्तु कदमबाई के यह संकल्प और सपने टूट जाते हैं। बदले की आग आंखों से निकले आंसुओं के पानी से धीरे–धीरे खत्म हो जाती है, क्योंकि सभ्य समाज राणा को अपनी पहचान नहीं देता और न ही मंसाराम जाहिर तौर पर राणा को पुत्र रूप में स्वीकार करता है। राणा भी युवावस्था में अपने मूल पेशे से बाहर निकल कर शिक्षित होना चाहता है। वह सभ्य समाज से होने वाले शोषण को सहने के बावजूद भी मानवीय करुणा, प्रेम, आत्मीयता और दया आदि गुणों से युक्त सच्चरित्र इन्सान बनने की कोशिश करता है। पर सभ्य समाज उसकी जन्मजात अपराधी की पहचान के तहत उसे उत्पीड़ित करने से बाज नहीं आती। 'स्कूल में भर्ती होने के दौरान उच्चवर्गीय छात्रों द्वारा राणा का बस्ता पीपल के पेड़ पर टांग दिया जाता है। जब बस्ता लेने के लिए राणा पीपल के पेड़ पर चढ़ता है, तब क्रूर स्वभाव के मास्टरजी राणा को कोड़े से पीटते हैं।'[5] इसके अलावा लेखिका ने राणा के शोषण, उत्पीड़न और उस पर हुए अत्याचारों को स्कूल की छुआछूत की घटनाएं, पुलिस द्वारा बिना वजह चोरी के जुर्म में फसाना, मंसाराम की पत्नी आनंदी द्वारा रास्ते पर चलते राणा के पीछे कुत्ते को दौड़ाना और जोधा आदि गांव के लोगों द्वारा डरा–धमकाकर पीटना आदि कई प्रसंगों में उजागर किया है। ऐसे में राणा मानसिक आघातों को झेलते हुए अन्तर्द्वन्द्व से गुजरता है। वह अपनी पहचान को प्राप्त करने में असफल होकर मनोरुग्ण बन जाता है। राणा की पहचान प्राप्ति की दिशा में हुई हार एवं असफलता को लेखिका ने बड़ी कुशलता से उसकी प्रेमिका अल्मा को राजनीतिक मंच पर लाकर सफलता में तब्दील किया है। 'कबूतरा जाति के रामसिंह की पुत्री अल्मा हर स्थिति को सीढ़ी बनाकर दीवारें फांदती कबूतरी है।'[6] अल्मा का पहले–पहल सूरजभान के गुंडों द्वारा अपहरण किया जाता है। बाद में उसे सत्ता के दावपेंच के तहत समाज कल्याण मंत्री श्रीराम आरती के समक्ष नजराने के तौर पर पेश किया

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

जाता है। श्रीराम शास्त्री बुढ़ापे में सहारे की जरूरत को महसूस करके अल्मा को स्वीकृति देते हैं और जब उनका राजनीतिक अस्तित्व खतरे में आता है तो प्रतिष्ठा की खातिर पत्नी बना लेते है। ''अन्त में अल्मा कबूतरी से श्रीमती अल्मा शास्त्री में परिणत हो जाती है, बबीना विधानसभा सीट की सम्भावित प्रत्याशी। सत्ता की दमनकारी संरचनाओं द्वारा अधिगृहित। वह अपने 'अपहरण' को अपना 'प्रतिशोध' समझती है।''[7] श्रीराम शास्त्री के मृत्युपरांत राजनीतिक वारिस के रूप में ही क्यों न हो पर अल्मा को सभ्य समाज द्वारा स्वीकृत किया जाता है। इस उपन्यास की समूची अन्तर्वस्तु में कबूतरा जनजाति के शोषण और संघर्ष की स्थितियों का समाजार्थिक पक्ष उजागर हुआ है। साथ ही कबूतरा स्त्रियों द्वारा नारी चेतना के स्वर अनुमोदित है। इसके अलावा कबूतरा जनजाति का समाजिक जीवन, सांस्कृतिक विरासत, अस्तित्व एवं पहचान के सवाल, जमींदार व पुलिस द्वारा होने वाले अन्याय–अत्याचार, स्त्री शोषण, जाति आधारित भेदभाव, आर्थिक–सामाजिक प्रश्न आदि का यथार्थ सापेक्ष चित्रण इस अल्मा कबूतरी उपन्यास के माध्यम से मिलता है।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में कबूतरा जनजाति को सभ्य समाज के द्वारा हाशिये पर रखे जाने का चित्रण करने की दिशा में ही लेखिका ने कबूतरा जाति के जीवन की गतिविधियों, संस्कारों, रहन–सहन, आचार–विचार और लोक संस्कृति के पहलुओं को भी उजागर किया है। कबूतरा पुरुष प्रधान समाज है, लेकिन इनके समाज में पुरुष की अपेक्षा स्त्रियों का अधिक महत्त्व रहा है। स्त्रियों के निर्देशन में पारिवारिक जीवन की बहुतांश गतिविधियां परिचालित होती है। कबूतरा जाति के लोग गांव–गांव घूमते हैं और गांव की सीमारेखा पर जहां जगह मिले अपना डेरा डाल देते हैं। इनका डेरे डालने का तरीका भी सामूहिक रूप से रहने का नहीं है, वे दूर–दूर तक फैले हुए होते हैं। फिर भी इनके डेरों में एक–दूसरों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित रहते हैं। कबूतरा जनजाति की संस्कृति और सभ्यता में उनके अपने जीवन मूल्य और दार्शनिक मान्यताएं रही हैं। उनका हिन्दू धर्म, प्रचलित लोक विश्वासों, लोकाचारों और परम्परागत रूढ़ियों पर प्रगाढ़ विश्वास है। उपन्यास में प्रस्तुत सन्दर्भों के अनुसार वे अलौकिक शक्तियों पर विश्वास रखते

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

हैं। शुभ की प्राप्ति और अशुभ के निवारण हेतु 'वीर देव' की पूजा करते हैं। जादू–टोना, मंत्र–तंत्र, भूत–प्रेत, चुड़ैल, गंडा–तावीज, शकुन–अपशकुन आदि से सम्बन्धित अंधविश्वासों को मानते हैं। कदमबाई का बेटा राणा जब बीमार होता है, उस दौरान किये क्रिया–कलापों का जिक्र है, ''हाय देवी माता, जमुनी चुड़ैल ने धर दबाया। ऐसे में गुनिया द्वारा वीरदेव की स्थापना की जाती है। बेर के पत्ते, गुड़ और बकरी का खून, रोटी का चूरमा, लाल कपड़ा, मद और बेल आदि को पास में रखकर गुनिया आग लहकाता है। खून के छीटें देता है। देवता आ गया था उसके ऊपर। वह मन्त्र पढ़ने लगा और वीर देवता का नाम लेकर हिलता रहा।''[8] इसी तरह राणा के द्वारा धर्म का दिया बुझने से डर पैदा होता है और देवता के रुष्ट होने की कल्पना में सब लोग असगुन या देवता को कुपित किये जाने की धारणा से राणा को पीटते हैं। इनमें अपने परम्परागत चोरी के पेशे को लेकर शनिवार और मंगलवार को चोरी करना शुभ दिन माना जाता है। चोरी से सम्बन्धित एक धारणा यह भी है कि, जिस घर में चोरी की जाती है, उस घर में चोरी के बाद मल त्यागना सगुन माना जाता है। यथा, ''कदमबाई ने जाल लगाकर खरगोश पकड़ लिया। खरगोश का गोश्त शुभ होता है। राणा के लिए मोटी रोटी बनेगी, भरपेट खाकर जाएगा, चोरी वाले घर में हगना सगुन है।''[9] अंधविश्वासों से घिरे जनजातियों में अज्ञानता का होना और प्रचलित प्रथा–परम्पराओं में बंधे रहना स्वाभाविक है।

कबूतरा जनजाति में चोरी करना पैतृक व्यवसाय रहा है। जब वे चोरी करते है तो चोरी का माल डेरे के मुखिया के समक्ष पेश किया जाता है। पर ''राणा ने मां के समझाने पर रिवाज के हिसाब से अंगूठी कबीले के मुखिया को भी नहीं दी।''[10] बस्ती का बच्चा जब पहली बार चोरी करने जाता है, रिवाज के मुताबिक वीरदेव की आराधना व पूजा की जाती है। बस्ती के सभी स्त्रियों के दर्शन किये जाते हैं। राणा जब चोरी करने जाएगा यह तय होने पर इस विधि का उल्लेख है। ''डेरों पर गहमागहमी शुरू हो गई। रात ही रात खरा की गुली और मद की धार छोड़ी। राणा के सिर पर बेर के पत्ते, फूल दूब धरकर वीरदेव का जयकारा होठों ही होठों में बोला। कदमबाई ने बच्चे के शिर पर हाथ धरकर मानता मानी। भजनी

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

काकी ने पंचामृत परसाद की तरह गुली और मद बांटा। औरतों ने राणा के सिर पर हाथ धरकर असीसें दीं, धंधे से लगे तो सगाई–सम्बन्ध हो।''[11] चोरी करने के बाद जो माल प्राप्त हुआ है, उसे पूरी बस्ती में बांट दिया जाता है। उनका यह रिवाज सामुदायिक जीवन में भाईचारा निर्माण करने की भावना का प्रतीक रहा है। अगर एक व्यक्ति भी चोरी करता है तो उस चोरी के माल को सभी डेरों में बांट दिया जाता है। कदमबाई का जेठ खुरदा ने गांव की सेंधमारी करके लाए पैसों का वितरण किये जाने पर कहा है, ''भजनी जिठानी ने पति की कामयाबी पर देवता मनाए। बच्चे की तकदीर, ताऊ हजार रूपए की चांदी लाया। डेरों में बंटते–बंटाते सौ रुपए हाथ में आए।''[12]

प्रत्येक जनजातीय समूहों में अपनी जातीय विरासत के अनुसार कलाएं मौजूद रही हैं। कबूतरा जाति में शिक्षा का अभाव रहा है, पर अपने कबीले के भीतर शौर्य, पराक्रम, साहस और चोरी के पैंतरे आदि से सम्बन्धित कलाओं का ज्ञान पीढ़ी–दर–पीढ़ी विकसित रहा है। वे अपने बच्चों को बचपन के दिनों से ही लाठी चलाना, गुलेल चलाना, अचूक निशाना साधना और शिकार करना आदि का प्रशिक्षण देते हैं। 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में कुशलतापूर्वक चोरी करने की कला का चित्रण मिलता है। बीस साल की अवस्था में जंगलिया अपने ससुर का अहसान उतारने के लिए रबी के खलियान उठते ही आधी रात के समय सड़क पर जाती बैलगाड़ी का गेहूं भरा सलिता चीरकर दस मन गेहूं चुरा लेता है। रात ही रात गठरी बांध–बांधकर अपने डेरे लाता है। इस प्रसंग में लेखिका ने जंगलिया और कदमबाई के बीच हुए संवादों से चोरी करने की कला को संदर्भित किया है। ''उन्नीस वर्षीया पत्नी की आंखे फटी रह गई। कदमबाई ने इतनी लंबी–चौड़ी चोरी अपने जीवन में कभी देखी न थी। थरथराती हुई बोली, 'तू कैसे लाया रे?' जंगलिया हलके से ताली पीटकर धीमी हंसी हंसा, 'री, गाड़ी की तली से मक्खी की तरह चिपट गया था। फेंटा में बंधी कटार से सलीता चीर दिया। तू अचम्भा क्यों कर रही है?''[13] गेहूं चुराने की यह विधि जंगलिया की कुशलता का प्रमाण है। जंगलिया के मृत्युपरांत कदमबाई भी अपने बेटे राणा को लाठी चलाना, गुलेल चलाना, अचूक निशाना साधना, बकरी पकड़ना, शिकार करना और बचने–भागने आदि का प्रशिक्षण

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

देती है। वह राणा द्वारा सीखने में गलती होने पर कहती है, ''पगले हथियार चलाना एक दिन की विद्या नहीं होता। जंगलिया कहता था, ये रोज–रोज के जौहर हैं। नये–नये पैंतरे निकल आते हैं। बेटा, आलस हमारा दुश्मन है। शिकार करेगा नहीं तो शिकार हो जाएगा।''[14] कबूतरा जाति में अपनी जातीय विरासत तथा पैतृक व्यवसाय के अनुसार कलाएं सदैव मौजूद रही हैं और उसका पीढ़ी–दर–पीढ़ी विकास होता रहा है।

कबूतरा जनजाति हिन्दू धर्म की विवाह सम्बंधी विधियां और संस्कारों का अनुसरण करती है, किन्तु कुछ वैवाहिक रस्मों एवं रिवाजों का अपनी परम्परा के अनुसार पालन करती है। इनके यहां दहेज लड़की वाले पक्ष से नहीं ली जाती, लड़के वाले ही लड़की के माता–पिता को वधू मूल्य देते हैं। दहेज के अलावा लड़की वाले लड़के की बहादुरी और चोरी करने की कुशलता को महत्त्व देते हैं। इसी शर्त पर शिवसिंह कबूतरा अपनी बेटी कदमबाई का विवाह जवांबाजी व चोरी करने में कुशलता प्राप्त जंगलिया से करता है। वह परम्परा के अनुसार धन नहीं लेता। बारात का स्वागत बड़ी शान से करता है। 'इनके विवाह में जंगलिया के यहां से शिवसिंह ने एक पैसा तक नहीं लिया, संग में गुली गोश्त और महुए की दारू की दावत का कौल किया था। विवाह के समय रस्म के मुताबिक बारात लड़कियों के यहां पर दस–पन्द्रह दिन तक ठहरी थी।''[15] गुण–कर्म को विशेष महत्त्व देकर विवाह करने के इनके रिवाजों में अतिथियों का शराब पिलाकर स्वागत किया जाता है और खान–पान पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

कबूतरा जनजाति का जीवन लोककथाओं और किवदंतियों के ज्ञान से परिचालित है। इनमें अपने पुरखों के समय से प्रचलित रही कई लोककथाओं का उल्लेख उपन्यास में मिलता है, जिसमें समूह मन की स्मृतियां और मौखिक लोक इतिहास के तत्वों का दार्शनिक पक्ष उजागर हुआ है। रानी पद्मिनी, रानी झलकारीबाई और महाराणा प्रताप के अपने ऐतिहासिक संघर्षों एवं गौरव के बारे में कबूतरा समाज की भूरी, भजनी और रामसिंह बोलचाल की भाषा में कथाएं सुनाते हैं। रामसिंह सुनाता है, ''हमारी मां कहती थी, पद्मिनी नहीं मरी। उसकी दादी ने बताया और दादी को उसकी दादी ने कि पद्मिनी अपनी बांदी सखियों

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

और रानी रक्कासाओं को लेकर सैनिकों के साथ भाग छूटी थी। आन–बान कहां रह गई, जिन्दगीं ने सब छीन लिया। प्राण ही सबसे प्यारे लगे।''[16]

कबूतरा जाति में धार्मिक और जातीय परम्परा के अनुरूप पर्व, उत्सव और त्योहारों को मनाया जाता है। इनके धार्मिक कार्य, पूजा–पाठ और विधि विधान पूरे करने के लिए पुरोहित नहीं होते। उनके ये सारे कार्य उनकी जाति में सामूहिक रूप से चुना गया मलिया पंडित करता है। कबूतरा बस्ती में मलिया पंडित को विशेष महत्त्व प्राप्त है। कबूतराओं के लिए बेटे का जन्म होना ज्यादा खुशी दिलाता है। राणा के जन्म के अवसर पर एक कुनबी कथा घटित होती है। जिसके बारे में लेखिका लिखती है, ''मलिया का पंडित वेश, डेरों से एक–एक कटोरी आने वाला अनाज, आटे का चौक, लोटे से भरा शुद्ध पानी, बेर के पत्ते, गुड़, कलावा, अगरबत्ती और कुनबी कथा शगुली और दालभात की पंगत बैठने लगती है।''[17] धार्मिक रस्मों, उत्सवों और पर्वों को कबूतरा लोग एक परिधि में मनाते हैं। हिन्दू धर्म की परम्परा में प्रचलित होली त्योहार कबूतरा समाज के लिए उल्लास और प्रसन्नता का प्रतीक रहा है। इस अवसर पर कबूतरा समाज के पुरुष और स्त्रियां गोल घेरे में नृत्य करते हैं। इसी सन्दर्भ में उनके लोकगीतों का भी उल्लेख आता है।

''मोरी चंदा चकोर, काजर लगा के आ गई भोर ही भोर
मोरी चंदा चकोर, छतियां पै तोता, पै मोर
मोरी चंदा चकोर, चोली में निबुआ घंघरा घुमेर''[18]

कबुतराओं में सुख और दुःख के समय भी गीत गाने की प्रथा रही है। जंगलिया के मौत पर गीत गाने का जिक्र है–

''आजो तो जाजो तो रे पान फूटो मत जातो रे
घोड़ो घोड़ो घूमती, मोर आवतीं। फुलवादी केवड़ा
आवतीं, आवतीं हमीर दे, वीर दे...''[19]

(हे वीर देवता आओ। हम बड़े कष्ट में हैं, आओ। हमीर दे हमारे दुख दूर करो)

इसी तरह मृत्यु के समय गम और दुख को भूलने के लिए गीतों को गाया जाना कबूतरा जनजाति के संस्कृति का विशेष पहलू है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

निष्कर्षतः मैत्रेयी पुष्पा कृत 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में कबूतरा जनजाति का लोक–व्यवहार एवं संस्कृति के दर्शन सर्वत्र दिखायी पड़ता है।

संदर्भ सूची–

1. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, पृ. 132
2. महेश कटारे, चीखते सपने का सफर (समीक्षा), साक्षात्कार, जुलाई, 2000, अंक–247, पृ. 112
3. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, पृ. 37
4. वही, पृ. 99, 100
5. वही, पृ. 81
6. वही, पृ. 310
7. ललित कार्तिकेय, प्रकृतवाद के लौह–शिकंजे में कैद अल्मा (आलेख), आलोचना, जुलाई–सितम्बर, 2001, सहस्राब्दी अंक–06, पृ. 115
8. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, पृ. 51
9. वही, पृ. 66
10. वही, पृ. 14
11. वही, पृ. 56, 57
12. वही, पृ. 33
13. वही, पृ. 14
14. वही, पृ. 37
15. वही, पृ. 14
16. वही, पृ. 129
17. वही, पृ. 34
18. वही, पृ. 42
19. वही, पृ. 26